तीन नाम

लेखनः पैट्रिशिया मैकलाकलेन

चित्रः एलैक्ज़ैण्डर पर्टजॉफ

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जब मेरे पर-दादा छोटे थे वे घोड़े से जुती गाड़ी में बैठ परैरी (घास के मैदान) की सड़कें पार कर स्कूल जाया करते थे। उनका कुत्ता भी, जिसके तीन नाम थे, उनके साथ ही स्कूल जाया करता था।

यह कहानी एक लड़के और उसके कुत्ते की है। वे बहुत पहले एक-दूसरे के सबसे पक्के दोस्त थे, तब जब दुनिया एक कमरे वाले स्कूली इमारतों, पतझड़ की तेज़ हवाओं, बसन्त के बवंडरों, और दूर-दूर तक पसरे, घास से भरे खेतों से बनी हुआ करती थी।

पैट्रिशिया मैकलाकलेन के शब्द और एलैक्ज़ैण्डर पर्टजॉफ के जलरंगों से बने चित्र उस भूली-बिसरी दुनिया के सौन्दर्य, उसके खुलेपन, आराम और दोस्तानेपन को जीवन्त बनाते हैं।

तीन नाम

लेखनः पैट्रिशिया मैकलाकलेन

चित्रः एलैक्ज़ैण्डर पर्टजॉफ

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

यह क़िताब शार्लेट ज़ॉल्टोव के लिए है - सस्नेह,

-पी. एम.

लिव व एना को,

-ए. पी.

जब मेरे पर-दादा छोटे थे - आज से सौ साल पहले, जैसा वे कहना पसन्द करते हैं, पर यह सच नहीं है - वे परैरी (घास के मैदानों) की सड़कों पर घोड़े से खींची जाने वाली गाड़ी में बैठ स्कूल जाया करते थे। वे ओवरऑल पहना करते थे जिनके बकल कंधों पर लगे होते थे, और चमड़े से बने ऊँचे जूते, जिनके तस्में बांधने मे बहुत समय लगता था - पर-दादा कहते कि उसमें सौ साल लगते थे। पर यह भी सच नहीं है।

उनका तीन नाम वाला कुत्ता भी उनके साथ स्कूल जाता था।

"किसी कुत्ते के तीन नाम कैसे हो सकते हैं?" मैंने पूछा।

"एक दिन वह बिना किसी नाम के हमारे पास आया था," पर-दादा ने कहा। "मेरी बहन लिली उसको टेड कहने लगी। ममा उसे बूटस् पुकारतीं, क्योंकि उसके सामने वाले पैर घुटनों तक सफ़ेद थे, और पापा उसे पैल (दोस्त) कहते, क्योंकि वह सचमें अच्छा दोस्त था।"

पर-दादा उसे तीन नाम कहते थे।

"ये तो चार नाम हो गए," मैंने उनसे कहा, पर यह वे पहले ही जानते थे।

जब स्कूल खुला, उसके पहले दिन तीन नाम गाड़ी के इर्द-गिर्द डोलता, नाचता फिरा।

"ममा ने मुझे ध्यान से देखा, ताकि उन्हें यक़ीन हो जाए कि मैं गर्मियों की धूल-मिट्टी से साफ़ हूँ," पर-दादा ने कहा। "पापा ने मेरा एक गाल चूमा और तब दूसरा। वे ममा को देख मुस्कराए, जो सूखते कपड़ों की कतारों के पीछे रोने जा छिपी थीं।"

पर-दादा की माँ हर साल स्कूल खुलने के पहले दिन रोती थीं, अपने ही कारणों से।

घोड़गाड़ी को लिली हाँक रही थी, क्योंकि वही सबसे बड़ी थी। स्कूल काफ़ी दूर था, तक़रीबन तीन मील दूर।

"एक बार तो हम पैदल भी गए थे।"

"क्या आप घास के मैदानों में खो नहीं गए?"

"कोई परैरी की सड़कों पर खो ही नहीं सकता," मेरे पर-दादा ने कहा। "कोई नहीं खो सकता अगर तीन नाम घर का रास्ता बताने साथ हो।"

“तीन नाम को स्कूल अच्छा लगता था। उसे हमारे शिक्षक मिस्टर बैकेट पसन्द थे, जो उसके लिए बचा-खुचा खाना लाते थे। उसे बच्चे भी पसन्द थे, सिवा विलियम के, जो बड़ा धूर्त था।”

“तीन नाम विलियम को भौं चढ़ा कर घूरता था,” पर-दादा ने बताया।

“मैंने तो कभी किसी कुत्ते को भौं चढ़ाते नहीं देखा,” मैंने कहा।

“तीन नाम अच्छे से भौं सिकोड़ता था,” वे बोले। “लिली गाड़ी चला विलियम के घर वाली सड़क पर ले जाती। तीन नाम पीछे खड़ा हो जाता, कान उठाए, और उसकी पूंछ गोल-गोल घूमा करती थी। बच्चे हंसते हुए गाड़ी में सवार होते; रेचल, मैटी और विलियम, अपनी सलेटों और खाने की बाल्टियाँ उठाए। तीन नाम हमेशा सिर्फ विलियम को भौं चढ़ा घूरता।”

गाड़ी तलैया का चक्कर लगा आगे बढ़ती, पर-दादा उसे दलदली ताल कहते थे। तब गाड़ी परैरी घास, गेहूँ, तूलिका घास और नीली घास के खेतों को पार करती। तीन नाम जो कुछ भी देखता उस पर भौंकता। वह पैनी पूंछ वाले तीतरों पर भौंकता जो डर कर उड़ जातीं, वह परैरी के मैदानी कुत्तों पर भौंकता जो काली-बेरियों सी आँखें खोले मैदानों में खड़े होते।

एक बार, पर-दादा ने बताया, तीन नाम बादल पर भी भौंका जब उसने सूरज को ढ़क दिया था।

आगे बहुत दूर से ही हमें दूसरे बच्चे भी स्कूल आते दिखते। वे दूर से बहुत छोटे लगते थे, मानो टम्बलवीड (एक तरह की छोटी झाड़) हों। मार्था अपने घोड़े पर आया करती थी और लू अपने खच्चर पर। ट्विलिंग जुड़वें, जिनकी शक्ल एक सी नहीं थी, पैदल ही आते थे, क्योंकि वे पास ही रहते थे। जॉर्ज और जैनी पहले ही पहुँच चुके होते थे और उनके घोड़े खेत में बंधे घास चरते दिखते थे।

घोड़ों के लिए एक बखार भी था, ठंडा और अंधेरा। उसमें फूस, काठी के चमड़े और पुरानी लकड़ी की बू आती थी। उसमें जेड़ की बू आती थी, जो जैनी का चितकबरा घोड़ा था, और सुरमई धब्बों वाली मॉड और सफ़ेद मुँह वाली सोफी की भी बू आती। ''पर सबसे ज़्यादा,'' पर-दादा कहते, ''आती थी सालों से उसमें सोने वाले घोड़ों की पुरानी, मीठी गंध।''

पर-दादा की स्कूल की इमारत छोटी-सी थी और सफेद रंग से पुती थी। उसमें बस एक ही कमरा, था, जिसमें एक अलाव था, और दीवारों पर कोट टांगने के लिए लोहे के आँकड़े लगे थे। तीन नाम बच्चों के कोटों, जूतों और दस्तानों के बीच ऊंघता था। सर्दियों में वह लकड़ी से जलने वाले अलाव के पास सोता। जब मिस्टर बैकेट अलाव में लकड़ी डालने के लिए उसका दरवाज़ा खोलते, वह अपनी पूंछ फटकारता था। कभी-कभार वह पर-दादा के मोज़े चढ़े पैरों पर भी लेट जाता, तब पर-दादा उसके दिल की धड़कनों को महसूस कर पाते थे।

स्कूल के पास खुले में शौचालय बने हुए थे, एक लड़कियों के लिए और एक लड़कों के लिए। सर्दियों में वहाँ कोई ज़्यादा समय नहीं बिताता था। पर बसन्त में एक बार लू ने वहाँ चुपचाप बैठ एक पूरी कविता लिख डाली थीः

अरे ओ, बादल आँखों वाली खिड़कियाँ

जो नीले कम्बल सरीखे आसमान से झांकती हो।

पर-दादा के एक कमरे वाले स्कूल में सभी कक्षाएं थीं। जॉर्ज सबसे बड़ा था और उसने पर-दादा को लम्बी विधि से भाग करना और जूतों के तस्मों में दोहरी गाँठें बांधना सिखाया था। मैटी केवल सात साल का था, वह जब भी रोता था, पर-दादा गलबहियाँ डाल उसे चुपाते, और अक्षर पहचानना सिखाते।

''क्या तब भी वर्णमाला में अब की तरह छब्बीस अक्षर होते थे?'' मैंने जानना चाहा।

''हाँ, अब की तरह छब्बीस ही अक्षर,'' पर-दादा ने मुझे बताया।

परदादा अच्छे मौसम में बाहर दोपहर का खाना खाते थे, पीने के लिए कुएँ से ठंडा पानी आता था। तीन नाम एक कटोरे से पानी पीता और सभी बच्चों को तब तक घूरता जब तक कि वे अपना खाना उसके साथ साझा न करते।

परदादा घास के मैदान में लोमड़ी और हंस का खेल खेलते थे, और खलिहान में लुका-छिपी खेलते थे, लेकिन उनका पसंदीदा खेल कंचे था। वह अपने कंचे एक पुराने मोजे में रखते थे और धूल में एक घेरा बनाते थे, और हर कोई बारी-बारी से खेलता था। जेनी खेल में माहिर थी। पर एक बार पर-दादा ने बोतल भर कर कंचे जीते थे। उन्होंने अपनी भाग्यशाली एगी को रख लिया।

"यह एगी सौ साल पुरानी है," उन्होंने कहा, "मेरी तरह।"

पतझड़ में तेज़ हवाएं उठा करती थीं, जो कपड़ों की रस्सियों में टंगी चद्दरों को फड़फड़ा कर सुखा देती थीं। रातें तब उतनी ही चुस्त कूरकुरी हो जातीं जितने तहख़ाने में रखे सेव। घोड़ों को ये तेज़ हवाएं रास नहीं आती थीं। एक बार तो वे इतनी तेज़ दौड़े कि लिली उन्हें रोक ही नहीं सकी। वह पूरे दम से लगाम थामे रही और तीन नाम स्कूल पहुँचने तक एक बार भी नहीं भौंका।

सर्दियों में अगर बर्फ़ बहुत गहरी नहीं होती तो बच्चे स्लेज (बिना पहियों वाली बर्फ पर फिसलने वाली पाटी) से स्कूल जाते। मिस्टर बैकेट सूरज उगने से पहले, अल्ल सुबह ही स्कूल पहुँचते ताकि अलाव में लकड़ी जला कमरे को गर्म कर दें। कभी-कभी वे अलाव पर आलू भूनते और पूरे कमरे में गरमागर्म आलुओं और मक्खन की खुशबू फैल जाती। तीन नाम भी आलू खाता, पर उसका छिलका नहीं।

"सर्दियों की छुट्टियों में स्कूल में सबके लिए एक दावत होती थी," पर-दादा ने बताया। "सभी बच्चे, उनके माता-पिता, दादा-दादी, चाचा-चाची, मौसा-मौसी सबके लिए। स्कूल की हरेक खिड़की के पास एक-एक मोमबत्ती जलाई जाती। उनकी रोशनी दूर तक देखी जा सकती थी। वे बर्फ़ के समन्दर में रोशनी की मीनारों-सी चमकती थीं।"

दावत में खाने की चीज़ें, पंच (फलों का रस, मसाले और शराब से बना पेय)) और संगीत होता था। मिस्टर बैकेट हर बच्चे को तोहफ़े में एक-एक क़िताब देते। जब मार्था वायलिन बजाती, तीन नाम अपना सिर छत की ओर उठा चीखता।

बसन्त आने के साथ धीरे-धीरे बर्फ़ पिघलने लगती। धरती काली ओर गीली लगने लगती और तलैया में पानी भर जाता। कभी-कभार तीन नाम गाड़ी से छलांग लगाता और तलैया में चलता। वह खुशी से सिर उठाता और पाखियों को डरा देता। बसन्त में तूफ़ान आते और कभी बवन्डर भी उठते। तब झीने बादल सुरंग की तरह आकाश से नीचे उतर जाते। सारे बच्चे तहखाने में जा छिपते जहाँ हिफाज़त थी और मिस्टर बैकेट लालटेन की रोशनी में बच्चों को कहानियाँ सुनाते। हवा चारों ओर गरज़ती और तीन नाम डर से थरथराता।

"एक बार तूफ़ान के बाद हमें खलिहान के पीछे किसीका शौचालय मिला, ज़रूर हवा उसे उड़ा लाई होगी," पर-दादा ने बताया। "एक और बार मिस्टर विलैक की बूढ़ी घोड़ी एनी, बेतरतीब हाल में स्कूल के बखार में दूसरे घोड़ों के साथ फूस खाती नज़र आई।"

और तब बहुत जल्द ही स्कूल का आख़िरी दिन भी आ गया। बसन्त गर्मियों में बदल चुका था और हवा में माटी-धूल थी। घास सूख कर भुरभुरी हो चुकी थी।

स्कूल में एक उत्सव का आयोजन हुआ। सब कलफ़ लगी सफेद कमीजें, सूती पोशाकें और चमचमाते जूते पहन कर आए। "मैंने अपने नए कॉडरॉय के निक्कर पहने, जो चलते वक़्त फुसफुस आवाज़ करते थे," पर-दादा ने बताया।

उस दिन सबके पीने के लिए नींबू की शिकंजी थी और साथ में बिस्कुट भी। जब मार्था ने अपना वायलिन बजाया, पर-दादा ने तीन नाम का मुँह पकड़ कर बन्द कर दिया, ताकि वह साथ में गाने के लिए चीखना न शुरू कर दे। मिस्टर बैकेट ने भाषण दिया और जॉर्ज ने भी, जिसने स्कूली पढ़ाई पूरी कर ली थी।

"मैं खुश हूँ," जॉर्ज ने कहा, "पर उदास भी।"

"दरअसल सभी उदास थे," पर-दादा ने कहा, "क्योंकि स्कूल खत्म हो गया था। घर पहुँचने तक तीन नाम भी एकदम चुप बैठा हुआ परैरी को अपने गिर्द एक कम्बल सा पसरा देखता रहा।"

आज से सौ साल पहले, जब पर-दादा छोटे थे, गर्मियाँ अच्छी हुआ करती थीं। दिन लम्बे और गर्म होते थे और रात में ज़र्द पीला चाँद उठा करता था। फिर भी पर-दादा को स्कूल की कमी खलती थी।

"तीन नाम को भी स्कूल की याद आती थी," पर-दादा ने बताया। "वह हर दिन परैरी की सड़कों पर निकल जाता। वह हर दिन गाड़ी के इर्द-गिर्द कूदता और नाचता था।"

और जब गर्मियों की घास में टिड्डे गुंजारने लगते, पर-दादा खलिहान में फूस पर लेट जाते। तीन नाम अपनी ठंडी गीली नाक से उन्हें धकियाता। "नहीं तीन नाम, अभी स्कूल जाने का समय नहीं है। पर जल्द ही आएगा, मैं वादा करता हूँ," वे धीमे से कहते। "जल्द ही।" तीन नाम, तीन बार गोल-गोल घूमता, तब पर-दादा के पास ही अनाज के एक बोरे पर सुस्ताने बैठ जाता। दोनों गर्मियों के सपने देखते। और दोनों ही स्कूल खुलने का इन्तज़ार करते।

पैट्रिशिया मैकलाकलैन परैरी में ही पैदा हुई थीं। वे दो अन्य सचित्र बाल पुस्तकों की भी लेखिका हैं, *ममा वन, ममा टू,* तथा *थ्रू ग्रैन्डपा'स आइज़* । उन्होंने किशोर पाठकों के लिए कई उपन्यास भी लिखे हैं, जिसमें *आर्थर फॉर द वेरी फर्स्ट टाइम* भी शामिल है, जिसे 1980 में गोल्डन काइट पुरस्कार दिया गया था; और *सारा प्लेन एण्ड टॉल,* जिसे 1986 में न्यूबेरी पदक से नवाज़ा गया। वे पश्चिमी मैसाच्युसैटस् में रहती हैं।

एलैक्ज़ैण्डर पर्टजॉफ स्वतंत्र कलाकार हैं, जिनकी रचनाएं कई कलादीर्घाओं में व्यक्तिगत व सामूहिक प्रदर्शिनियों में नज़र आती हैं। वे पश्चिमी मैसाच्युसैटस् में एक फार्म हाउस में रहते हैं। यह उनके द्वारा चित्रित पहली क़िताब है।

तीन नाम के लिए मॉडेल करने वाली हनी, एलैक्ज़ैण्डर के साथ रहती है। वह ग्रीनफील्ड एरिया एनिमल शैल्टर की स्नातक है।